संपादकीय

जनसत्ता 15 जुलाई, 2014 : □कबार फरि फलिस्तीनियों पर इजराइल का क्हर टूटा है□ इजराइल का क्हना है कि उसकी फौजी कार्रवाई का मक्सद हमास केआतंकी हमलों से नपिटना है□ लेकनि यह साफ है कि इजराइल की सैन्य कार्रवाई पूरी तरह गैर-आनुपातकि है□ उसकी बमबारी □कसौ छयासठ फलिस्तीनियों की जान ले चुकी है, जनिमें औरतें और बच्चे भी मारे ग□ हैं□ गाजा केहजार से ज्यादा लोग घायल हु□ है□ हजारों लोगों को अपनी जान बचाने केलि□ घरबार छो□ कर भागना प□ा है□ इजराइल की बमबारी का शकिार बनने और उनकेपलायन का सलिसलिा जारी है□ दूसरी ओर, हमास के राकेटी हमलों में कसिी इजराइली सैनकिया नागरकिकी जान नहीं गई है, जबकि इजराइल का क्हना है कि उसे नशिाने पर लेकर हफ्ते भर में हमास ने पांच सौ से ज्यादा राकेट दागे है□ इजराइल केप्रधानमंत्री बेंजामनि नेतन्याहू केरवै□ से लगता है कि उन्हें न अंतरराष्ट्रीय नयिम-कायदों की कोई परवाह है न वशि्व-जनमत की□ शायद इसलि□ कि अमेरकि इस घटनाक्रम पर अब तक खामोश रहा है और अन्य पश्चमिी देशों ने भी कोई तीखी प्रतक्रियिा जाहरि नहीं की है□ अलबत्ता संयुक्त राष्ट्र की मानवाधकिार परषिद ने जरूर चतिा जताते हु□ इजराइल से संयम बरतने की अपील की है□

नेतन्याहू ने यह क्ह कर गाजा पर इजराइली सैन्य कार्रवाई को सही ठहराया है कि हमास ने अपने हथयिार मस्जदिों और घरों में जमा कर रखे है और लोगों की रहिाइश केबीच ही वह अपने प्रशक्षिण केंद्र चलाता है□ इसी आधार पर नेतन्याहू ने गाजा में आम लोगों केमारे जाने को सैनकिकार्रवाई केदौरान की सामान्य क्षतकिार दयिा है□ लेकनि यह वास्तव में ऐसी त्रासदी है जसिकी जवाबदेही से इजराइल पल्ला नहीं झा□ सक्ता□ कई इजराइली बौद्धकिों ने भी नेतन्याहू केबयान पर सवाल उठा□ है□ उनका मानना है कि अतविादी सैन्य कार्रवाई इसलि□ की गई और इसलि□ की जा रही है कि गाजा पर क्हर बरपा कर फलिस्तीनियों का मनोबल तो□ा जा सके□ दशकों से इजराइल का रवैया यही रहा है कि वह कुछ भी करे, उसका कोई कुछ बगिा□ नहीं सक्ता□ हमास के तौर-तरीकों को जायज नहीं क्हा जा सक्ता, पर यह नहीं भूलना चाहि□ गाजा दुनयिा की सबसे घनी बसावटों में □कहै□ फरि, जब खुली हसिा का दौर नहीं होता, तब भी फलिस्तीनियों को इजराइल केआतंक केसा□ में जीना प□ता है□ गाजा में वे अपने घरों और अस्पतालों में भी सुरक्षति नहीं है, और दीवारों से घरि पश्चमिी तट क्षेत्र में इजराइली सैनकिों केनयिंत्रण, नगिरानी से गुजरते हु□ उन्हें रोज उत्पी□न और अपमान सहना प□ता है□ अपने लोगों से मलि पाना उनकेलि□ हमेशा दूभर होता है□

यह सब उन्हें इसलि□ झेलना प□ता है क्योंकि इजराइली नयिंत्रण से मुक्त अपने वतन का सपना उन्होंने छो□ा नहीं है□ उनकेपक्ष में समय-समय पर पारति संयुक्त राष्ट्र केप्रस्ताव लागू नहीं हो सके, कई प्रस्तावों को अमेरकि केवीटो ने गरिा दयिा□ आज फलिस्तीनी फत्तह और हमास केमेल-मलिाप के बावजूद अपने को कहीं ज्यादा असहाय महसूस करते है□ इसलि□ कि न सरि्फ पश्चमिी दुनयिा मूक्दर्शक बनी हुई है, अरब देश भी इस मामले में मुखर नहीं है□ अरब लीग की साख खुद इसकेसदस्य देशों केबीच बची नहीं है□ मस्रि से कुछ सकारात्मक पहल की उम्मीद की जा सक्ती थी, पर वह अपनी आंतरकि उलझनों में फंसा हुआ है□ फलिस्तीन केराष्ट्रपति महमूद अब्बास ने हसिा केमद्देनजर संयुक्त राष्ट्र से अनुरोध कयिा है कि वह फलिस्तीन को अपने संरक्षण में ले ले□ इस पर बान की-मून को गंभीरता से वचिार करना चाहि□□ पर साथ ही फलिस्तीन समस्या का स्थायी हल नकिलने की भी कोशशि हो□

फेसबुक पेज को लाइक करने केलि□ क्लकि करें- https://www.facebook.com/Jansatta

ट्वटिर पेज पर फॉलो करने केलि क्लकि करें- https://twitter.com/Jansatta